JAGRAN Josh
your guide to success

WWW.JAGRANJOSH.COM

सम्मिलित अवर अधीनस्थ सेवा मुख्य परीक्षा 2008 : हिन्दी साहित्य

2008
RCS-23
हिन्दी साहित्य
HINDI LITERATURE

निर्धारित समय : तीन घंटे] **[पूर्णांक : 100**
Time allowed : Three Hours] **[Maximum Marks : 100**

नोट : कुल **पाँच** प्रश्न करने हैं । **प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है । शेष प्रश्नों में से 'क' तथा 'ख' दोनों खण्डों से **दो-दो** प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं ।

खण्ड – 'क'

1. निम्नांकित में से कुल **तीन** अवतरणों की सन्दर्भ-सहित समीक्षात्मक व्याख्या करनी है । 'अ' तथा 'ब' वर्गों से न्यूनतम **एक-एक** अवतरण का चयन अनिवार्य है । **24 (3 × 8)**

वर्ग 'अ'

(i) समुंदर लागी आगि, नदिया जलि कोइला भई ।
देखि कबीरा जागि, मंछी रूखां चढ़ि गई ।।
जिहिं सरि मारा काल्हि, सो सर मेरे मनि बसा ।
तिहिं सरि अजहूँ मारि, सर बिनु सचु पाऊँ नहीं ।।

(ii) राखि न सकइ न कहि सक जाहू । दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू ।।
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू । बिधि गति बाम सदा सब काहू ।।
धरम सनेह उभयँ मति घेरी । भइ गति साँप छुछुंदरि केरी ।।
राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू । धरमु जाइ अरु बंधु बिरोधू ।।
कहउँ जान बन तौ बड़ि हानी । संकट सोच बिबस भइ रानी ।।
बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी । रामु भरतु दोउ सुत सम जानी ।।
सरल सुभाउ राम महतारी । बोली बचन धीर धरि भारी ।।
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका । पितु आयसु सब धरमक टीका ।।
राजु देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेसु ।
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु ।।

(iii) नहीं, ये मेरे देश की आखें नहीं हैं
पुते गालों के ऊपर
नकली भँवों के नीचे
छाया प्यार के छलावे बिछाती
मुकुर से उठायी हुई
मुस्कान मुस्कुराती ये आँखें –
नहीं, ये मेरे देश की नहीं हैं .....

(iv) इस धारा-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम,
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम !
शाश्वत नभ का नीला विकास, शाश्वत शशि का यह रजत-हास,
शाश्वत लघु-लहरों का विलास !
हे जग-जीवन के कर्णधार ! चिर जन्म-मरण के आर-पार,
शाश्वत जीवन-नौका-विहार !
मैं भूल गया अस्तित्व-ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत प्रमाण,
करता मुझको अमरत्व-दान !

वर्ग 'ब'

(v) यदि कहीं पाप है, अन्याय है, अत्याचार है तो उनका आशुफल उत्पन्न करना और संसार के समक्ष रखना, लोक-रक्षा का कार्य है । अपने ऊपर किये जाने वाले अत्याचार और अन्याय का फल ईश्वर के ऊपर छोड़ना व्यक्तिगत आत्मोन्नति के लिए चाहे श्रेष्ठ हो; पर यदि अन्यायी या अत्याचारी अपना हाथ नहीं खींचता है तो लोक-संग्रह की दृष्टि से वह उसी प्रकार आलस्य या कायरपन है जिस प्रकार अपने ऊपर किये हुए उपकार का कुछ भी बदला न देना कृतघ्नता है ।

(vi) राजनीति साहित्य नहीं है । उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है । कभी एक क्षण के लिए भी चूक जायें, तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है । राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है ।

(vii) विवाह की ग्रन्थि दो के बीच की ग्रन्थि नहीं है, वह समाज के बीच की भी है । चाहने से ही वह क्या टूटती है ! विवाह भावुकता का प्रश्न नहीं, व्यवस्था का प्रश्न है । वह प्रश्न क्या यों टाले टल सकता है ? वह गाँठ है जो बँधी कि खुल नहीं सकती । टूटे तो टूट भले ही जाये, लेकिन टूटना कब किस का श्रेयस्कर है ?

2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबन्ध-शैली मूलत: विचार और विवेचन की शैली है, उनके निबन्ध उनके बौद्धिक मन्थन के परिणाम हैं । पठित निबन्धों के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए । **18**

3. 'रामचरितमानस मानवीय मूल्यों की महामंजूषा है ।' अयोध्याकाण्ड के वनवास-प्रसंग के आधार पर प्रमाणित कीजिए । **18**

4. 'कामायनी' के महाकाव्यत्व पर विचार करते हुए स्पष्ट कीजिए कि 'कामायनी मानव-चेतना का महाकाव्य है ।' 18

5. 'गोदान' उपन्यास के आधार पर होरी का चरित्रांकन कीजिए । 18

अथवा

कबीर की साधना-पद्धति में गुरु का स्थान एवं महत्त्व निरूपित कीजिए ।

खण्ड – 'ख'

6. हिन्दी साहित्य के काल-निर्धारण और नामकरण के आधारभूत सिद्धान्तों का विवेचन करते हुए बताइए कि उपलब्ध इतिहास-ग्रन्थों में आप किसे सबसे अधिक वैज्ञानिक मानते हैं । 20

7. हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में साहित्यिक भाषा के रूप में खड़ी बोली के विकास का परिचय दीजिए । 20

8. 'छायावाद' का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसकी विषयगत प्रवृत्तियों का सोदाहरण विवेचन कीजिए । 20

9. छायावादी हिन्दी-आलोचना के उद्‌भव और विकास पर संक्षिप्त, किन्तु सारगर्भित निबन्ध लिखिए । 20

10. 'प्रयोगवाद' के नामकरण पर विचार करते हुए उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए । 20